मसीह का कार्य मसीही जीवन की पुकार करता है (तीतुस 3)

''... मैं चाहता हूं, कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले इसलिए कि जिन्होंने परमेश्वर की प्रतीति की है, वे भले - भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें'' (तीतुस 3:8)।

2:11-14 में पौलुस ने हमें जीवन के विषय में और भले कामों में सरगर्म होने का निर्देश देते हुए खुलकर चर्चा की कि परमेश्वर का अनुग्रह ज़्या है और सब लोगों पर यह कैसे प्रगट हुआ था। 3:1-11 में उसने मसीह के कार्य के लिए आवश्यक विशेष मसीही बर्ताव का वर्णन किया। ये विशेष बातें लोगों (3:1, 10, 12, 13), व्यवहार के सिद्धांतों (3:2, 3), और हमारे लिए परमेश्वर के अनुग्रह के काम की चेतना से सज़्बन्धित हैं (3:4-6)। इन सभी बातों का सज़्बन्ध एक बड़े चरम से है जिसका वर्णन 3:7 में मिलता है: ''जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।'' बहुत बार अस्थाई रहने वाली परीक्षाओं में वह महिमामय लक्ष्य भूल जाता है। अन्तिम सलाम भेजते हुए भी पौलुस ने निर्णायक टिप्पणियों (3:12-15) से अपने ध्यान को बनाए रज़ा।

पाठ 5: मसीह का कार्य और मसीही आचरण (3:1-11)

जैसा जीवन जीने के लिए कहा जाता है (पद 1, 2)

सरकारी मामलों में (पद 1)

पौलुस ने कहा, ''लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के आधीन रहें, और उनकी आज्ञा मानें ...'' (तीतुस 3:1)। मसीही लोग अधिकारियों के प्रति सज़्मान ही दिखाएंगे (देखिए प्रेरितों 23:1-5; 1 पतरस 2:13-17)। जिस आचरण का यहां विशेष तौर

पर उल्लेख है उसके लिए ''अधिकारियों''[1] के अधीन रहना और उनकी आज्ञा मानना[2] आवश्यक है। इसका सम्बन्ध शासकों या हाकिमों और अधिकारियों अर्थात कानून बनाने वालों और लागू करने वालों दोनों से है। ''आज्ञा मानना'' का अर्थ *इसे करना* है, जबकि ''अधीन'' में *व्यवहार* का विचार मिलता है (एक समानान्तर संरचना के लिए देखिए इब्रानियों 13:17)। दोनों को मिलाने पर इन शब्दों का अर्थ होता है कि वही किया जाए जो कानून कहता है और उसे करने में अच्छा व्यवहार हो।

यदि प्रभु के लोग ''हर भला काम करने के लिए तैयार[3]'' हैं तो उनके लिए अधीन होना और आज्ञा मानना स्वाभाविक ही होना चाहिए (इफिसियों 2:10; गलातियों 6:9, 10; तीतुस 2:14)। इस संदर्भ में यह एक महत्वपूर्ण शर्त है। ''भले कामों'' में हाकिमों और अधिकारियों के सामने अधीनता से आज्ञा मानना भी शामिल है। इसमें वे हाकिम नहीं आते जो मसीही लोगों को बुराई करने के लिए कहते हों (रोमियों 13:1-7 में हाकिमों के लिए दी गई परमेश्वर की ईश्वरीय योजना पर ध्यान दें), और इसमें वह मसीही भी शामिल नहीं हैं जो सामाजिक मामलों में लापरवाही से कार्य करता है (देखिए मत्ती 5:13-16; 22:17-21)। मसीही व्यक्ति के लिए किसी भी पल भले काम करने के लिए तैयार होना आवश्यक है।

यह एक दुखद तथ्य है कि समाज में नैतिक बुराइयों के सुधार और नैतिकता के व्यवहार को प्रोत्साहन देने के लिए सरकारी अधिकारी अक्सर परमेश्वर के लोगों से बाज़ी मार जाते हैं। पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा था कि मसीही लोग जलसे-जुलूस निकालें, बल्कि वह चाहता था कि परमेश्वर के लोग मसीह के पदचिह्नों पर चलें और नैतिक और मानवीय व्यवहार में लोगों के सामने एक नमूना पेश करें।

सामाजिक मामलों में (पद 2)

किसी कार्य को करने और न करने दोनों के लिए उचित व्यवहार आवश्यक है। मसीही व्यक्ति को किसी को ''बदनाम''[4] नहीं करना चाहिए (3:2)। इस प्रकार की बातें मसीही लोगों के लिए ठीक नहीं हैं। हमारे मुंह से किसी प्रकार की कोई गंदी बात नहीं निकलनी चाहिए (देखिए इफिसियों 4:29; कुलुस्सियों 4:6; 1 पतरस 3:9, 10)। ऐसी बातों से कोई अच्छा उद्देश्य पूरा नहीं होता और न ही ये मानवीय सम्बन्धों में लाभदायक हो सकती हैं।

मसीही व्यक्ति ''झगड़ालू न''[5] हो। यहां यह ध्यान देना सही है कि अध्यक्षों में पाए जाने वाले गुण (1 तीमुथियुस 3:3) हर मसीही पर लागू होते हैं। इस व्यवहार का एक बड़ा उदाहरण यिर्मयाह द्वारा दिया गया है। अपमान होने पर भी वह किसी और दिन वापस आने के लिए विनम्रता से चला गया, जब उसके पास ''यहोवा यों कहता है'' कहने के लिए होना था (यिर्मयाह 28:1-16)।

मसीही व्यक्ति ''कोमल स्वभाव''[6] का होना चाहिए। झगड़ा होने की स्थिति में भी स्पष्टतावादी यह मन और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। मसीही व्यक्ति को ''बड़ी नम्रता''[7] दिखानी चाहिए जिससे उसकी नम्रता का सब लोगों में पता चलता हो। यूनानी शब्द में कायल करने की सामर्थ का संकेत है, परन्तु वह सामर्थ नियन्त्रण में है। बार्कले ने इस शब्द

को एक जंगली जानवर के हवाले से समझाया, जो हर आज्ञा मानने लगते हैं। उनमें सामर्थ तो अभी भी है, परन्तु अब यह सामर्थ नियन्त्रण में है।[8]

देखभाल करने वाले सृष्टिकर्ज़ा के कारण आने वाला परिवर्तन (पद 3-7)

मन फिराव और मन परिवर्तन से ही होने वाले बदलाव का पता चलता है। मन फिराव मन के बदलने को कहते हैं जिससे मन परिवर्तन (कनवर्शन) हो जाता है अर्थात मार्ग और व्यवहार बदल जाता है। फिर पौलुस ने चरित्र के कुछ गुण बताए जिनसे पता चलता है कि इन परिवर्तनों को तरतीब ज़्यों दी गई है।

मानवीय मूर्खता परिवर्तन की मांग करती है (पद 3)

पौलुस ने कहा था कि ''हम भी पहिले, ...'' (तीतुस 3:3)। इनमें से कितनी मूर्खताएं कलीसिया को सताने वाले पौलुस (शाऊल) के जीवन में पाई जाती थीं? आपके जीवन में इनमें से कितनी मूर्खताएं थीं?

ज़्या आप ''निर्बुद्धि''[9] हैं? लोग किसी बात पर विचार न करके, निर्बुद्धि होकर या कामुक इच्छाएं बढ़ाकर मूर्खता कर सकते हैं। हम में से हर कोई अपने जीवन में किए गए मूर्खतापूर्ण कामों या क्षणों को याद कर सकता है। यह मूर्खता इसलिए हो सकती है ज़्योंकि हमें ज्ञान नहीं था (जैसे पौलुस के मामले में, जब वह मसीही लोगों को सता रहा था; प्रेरितों 23:1), या शायद इसलिए कि हम विचार ही नहीं करते थे!

ज़्या आप ''आज्ञा न मानने वाले''[10] हैं? परमेश्वर की बात की ओर ध्यान न देने वाले की सबसे बड़ी खूबी यही होती है। नीतिवचन 5:12-14 ऐसे व्यज़्ति का चित्रण उस व्यज़्ति के रूप में करता है जो बाद में कहता है, ''मैंने शिक्षा से कैसा बैर किया, और डांटने वाले का कैसा तिरस्कार किया! मैंने अपने गुरुओं की बातें न मानीं और अपने सिखानेवालों की ओर ध्यान न लगाया। मैं सभा और मण्डली के बीच में प्राय: सब बुराइयों में जा पड़ा।''

ज़्या आप ''भ्रम में पड़े हुए''[11] हैं? कुछ लोग पथ भ्रष्ट होकर बड़े आराम से रहते हैं (देखिए रोमियों 16:17, 18; 1 यूहन्ना 4:1)। यदि हम सावधान नहीं रहते, तो उनके जाल में फंस जाएंगे!

ज़्या आप विभिन्न प्रकार की ''अभिलाषाओं''[12] में फंसे हैं? लोग अभिलाषाओं और सुख विलास के ''दासत्व''[13] में आ सकते हैं। *कितने दुख की बात है कि लोग इस सूची में दिए मूर्खतापूर्ण काम करते रहते हैं जब तक वे ''फंस'' नहीं जाते या इस प्रकार जीवन के दासत्व में नहीं आ जाते। संतुष्ट न होने और इस बात का एहसास होने के बावजूद कि यह जीवन उनकी इच्छा के विरुद्ध है वे यही जीवन बिताते हैं।* आयत 4 और 5 से पता चलता है कि, हो सकता है कि इस बात में हम एक दूसरे को छोड़ दें, परन्तु परमेश्वर हमें नहीं छोड़ता।

पौलुस के विवरण के अनुसार जो लोग मसीह को नहीं जानते उनका जीवन ''वैर भाव''[14] वाला और ''डाह''[15] भरा है। जब हम में डाह या द्वेष भर आता है हम समस्या से

घिर जाते हैं (निर्गमन 20:17)। क्रिसोस्टोम का कहना है, ''जैसे एक पतंगा कपड़े को कुतरता है, वैसे ही डाह भी मनुष्य को खा जाती है।''[16] ऐसा व्यक्ति अनैतिक है और उसे संतुष्ट नहीं किया जा सकता।

अपने आप को और अपने प्रभाव में आने वाले सब लोगों को दुखी करने वाले ऐसे व्यक्ति के लिए ''घृणित''[17] होना स्वाभाविक ही होगा। हम ऐसे आदमी के पास नहीं रहना चाहेंगे। यहूदा इसकरयोती के बारे में मसीह की टिप्पणी उस पर लागू हो सकती है: ''... यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता'' (मत्ती 26:24)। ऐसे व्यक्ति के साथ संगति रखना कोई पसन्द नहीं करता।

ईश्वरीय समर्थन अनन्तकालिक लाभों के साथ एक सकारात्मक परिवर्तन की पेशकश करता है (पद 4-7)

मनुष्य की मूर्खता से जुड़ी हमारी भयानक परीक्षाओं के बाद, यह कितनी बड़ी बात है कि परमेश्वर का परोपकार फिर भी हमारे पास आकर हम में क्षमता को देखता है। निश्चित रूप से यह परमेश्वर की ओर से ''कृपा''[18] का एक कार्य है (3:4)। रोबिन्सन ने ''कृपा'' की परिभाषा ''लोगों का दूसरों के लिए उपयोगी होना'' के रूप में की है।[19] हमारे लिए यह कितना उपयोगी है कि जब हम घृणित स्तर तक पहुंच गए थे, तो परमेश्वर हम तक पहुंचने और हमें ऊंचाई तक उठाने और अच्छा जीवन देने के लिए कितना दयालु था!

परमेश्वर अपनी ''प्रीति''[20] के कारण दया दिखाता है। यहां पर ''प्रीति'' के लिए *अगापे* शब्द नहीं है, जिसका इस्तेमाल आम तौर पर परमेश्वर से जुड़े प्रेम के लिए होता है (देखिए 1 यूहन्ना 4:8; रोमियों 5:8)। इसके बजाय, पौलुस ने ठीक ही ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया जो परोपकारी प्रेम और कृपा को दिखाता है (जिसकी यह संदर्भ मांग करता है और जिसकी परमेश्वर के पास भरपूरी है)।

परमेश्वर की भलाई की एक और विशेषता ''अनुग्रह''[21] है। बहुत बड़ी आवश्यकता के लिए कितने सुन्दर गुण हैं! जहां हमारी बड़ी आवश्यकता है, ''उसने हमारा उद्धार किया'' (3:5)। हम जिन्होंने पाप किया था अपने उद्धार के लिए कुछ नहीं कर सकते थे (रोमियों 3:23; 5:6-11; 2 कुरिन्थियों 3:5, 6; 1 यूहन्ना 1:8, 10)।

क्षमा से जुड़ी *योजना* के दो पहलू हैं: (1) मसीह में बपतिस्मा लेकर नया जीवन पाने के लिए ''नये जन्म का स्नान'' आवश्यक है (गलतियों 3:26, 27; रोमियों 6:3, 4; 2 कुरिन्थियों 5:17)।[22] (2) पवित्र आत्मा के द्वारा ''नया बनाना''[23] उसकी ईश्वरीय प्रतिज्ञा को पूरा करना है। यदि आत्मा के द्वारा नया बनाने का सम्बन्ध नये जन्म से है, तो आत्मा का प्रतिनिधि वचन है (मरकुस 16:15, 16; 1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 5:25 की तुलना 1 पतरस 1:22, 23 से करें)। यदि यह मसीह में हमारे जीवन में आत्मा का नया बनना है तो, गलतियों 5:22, 23 के फल लाना आवश्यक है।

नया जन्म सम्भव बनाने वाला *व्यक्ति* अर्थात हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह है (3:6; देखिए प्रेरितों 4:12)। 2:11-14 में हम पढ़ते हैं:

> ज़्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है। और हमें चिताता है, कि हम अभज्ञि और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भज्ञि से जीवन बिताएं। और उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ज़ा यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया ... (तीतुस 2:11-14)।

हमारे लिए उस ईश्वरीय योजना और उस महत्वपूर्ण व्यज्ञि के द्वारा *सज़्भावना* का द्वार दो प्रकार से खुलता है: (1) हमें उसके अनुग्रह से धर्मी ठहराया जाता है (इफिसियों 2:1-10), और (2) हमें अनन्त जीवन के वारिस बनाया जाता है (3:7; 1:2; इब्रानियों 5:8, 9)। हमारी पिछली मूर्खताओं को क्षमा करके हमें अनन्त जीवन की मीरास पाने के लिए परमेश्वर के परिवार में गोद ले लिया जाता है (देखिए गलतियों 4:4-7)। जैसे विलियम पैन्न ने लिखा है, ''जीवन का सबसे सही अन्त उस जीवन को जानना है जिसका अन्त कभी नहीं होता।''[24]

विश्वासियों में सामाजिक आचरण (पद 8-11)

2 से 7 आयतों में मार्गदर्शन दिया गया है जिससे ''हर एक अच्छे काम'' (3:1) की तैयारी हो सकती है। उन आयतों में पौलुस ने उस व्यवहार के बारे में जिसकी मांग की जाती है, उन बदलावों के बारे में जो आवश्यक हैं और उन ईश्वरीय लाभों के बारे में बताया जो परमेश्वर ने अपनी कृपा, प्रेम और अनुग्रह से उपलज़्ध कराए हैं। 8 से 11 आयतें हमें परमेश्वर की महान योजना को नुज़्सान पहुंचाने की कोशिश करने वाले हर व्यज्ञि के विरुद्ध अनुशासात्मक कार्यवाही करके, उस अच्छे जीवन और उन अच्छे कामों को बनाए रखने की चुनौती देती हैं।

लाभदायक काम (v. 3:8)

पौलुस चाहता था कि तीतुस इन बातों के विषय में ''दृढ़ता से''[25] बोले (3:8)। नये नियम में इस शज़्द का इस्तेमाल दूसरी बार केवल 1 तीमुथियुस 1:7 में हुआ है। परन्तु वहां जिन लोगों का उल्लेख है वे ''जो बातें कहते और जिनको दृढ़ता से बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं।'' कितने दुख की बात होगी यदि झूठे शिक्षक तो वह जोश दिखाएं परन्तु प्रभु के सुसमाचार प्रचारक दृढ़ता से सच्चाई को प्रस्तुत करने में असफल रहें!

पौलुस चाहता था कि सुसमाचार प्रचारक भाइयों को भले भले कामों में ''लगे रहने''[26] की ताड़ना करें। भले कामों को बनाए रखने के लिए, प्रभु के सेवकों को उनकी देखभाल करनी चाहिए और उनकी ओर ध्यान देना चाहिए। पवित्र शास्त्र का अध्ययन करके हम अपने आप को भले कामों के लिए तैयार कर सकते हैं (2 तीमुथियुस 3:16)।

ऐसे काम करते रहने के लिए हमें ज़्या करना चाहिए? ज़्योंकि वे परमेश्वर के काम हैं और ''भले'' हैं, इसलिए *परमेश्वर को भाने वाले* हैं। इफिसियों 2:10 कहता है कि हम

''मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।'' इसके अलावा, भले कामों से दूसरों का लाभ होता है इसलिए, *वे मनुष्यों को भाने वाले* हैं (1 तीमुथियुस 4:8; देखिए 4:8; 1 कुरिन्थियों 15:58)। अमेरिकी लैज़्चरर डेल कारनेगी द्वारा मित्र कैसे बनाएं और लोगों को कैसे प्रभावित करें की शिक्षा आरज़्भ करने से बहुत पहले मधुर सज़्बन्धों के लिए एक फार्मूला दिया था।

अलाभकारी और व्यर्थ काम (v. 3:9)

मसीही लोगों को चर्चा की कुछ किस्मों से ''बचना''[27] चाहिए (3:9) हमें ''मूर्खता''[28] भरे प्रश्नों से दूर रहना चाहिए। कोई बाइबल ज़्लास या भाइयों (और प्रचारकों) के बीच में होने वाली चर्चा ऐसे प्रश्नों पर समय गंवाया जाता है जिनसे किसी को कोई सीख नहीं मिलती, आगे के लिए योजना नहीं बनती या बुद्धि की बात नहीं होती (देखिए याकूब 1:5)। इसे अपवित्र और शुद्ध माना जाना चाहिए। जो लोग इस प्रकार की व्यर्थ चर्चा करते हैं वे उद्धार से जुड़ी बातों को नज़रअन्दाज करने और उन्हें तुच्छ जानने वाले लोग हैं।

हमें ''वंशावलियों'' से बचने के लिए कहा गया है (देखिए तीतुस 1:9, 10, 14; 1 तीमुथियुस 1:3-7; 6:3-5)। इसके बजाय हमें विश्वास योग्य वचन को पकड़े रखने और दूसरों को ऐसा ही करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कहा गया है। तीतुस के लिए पौलुस की बिनती वंशावलियों की खोजबीन से दूर रहने की थी। उस समय की यहूदी दंतकथाएं न तो ईश्वरीय थीं और न पारिवारिक गर्व के लिए (देखिए फिलिप्पियों 3:1-9; मज़ी 3:7-9; गलतियों 3:26-29)। जब हम यह कहते हैं कि ''मेरे दादा ने ऐसा कहा था'' या यह ज़ोर देते हैं कि ''फलां-फलां भाई ने ऐसे कहा था और वह भाई बहुत अच्छा प्रचारक था'' तो हम भी आज उसी फंदे में फंस जाते हैं। हमें अपने जीवनों में मनुष्यों द्वारा बनाई परज़्पराओं को मानकर उनके प्रभाव में नहीं आना चाहिए जिससे मसीह में हमारा विकास रुक जाए या कोई भला कार्य करने से हम पीछे हट जाएं। सब बातों के लिए मापदण्ड सच्चाई ही है और मार्ग केवल मसीह (यूहन्ना 8:32; 14:6; 2 यूहन्ना 9)। ये बिल्कुल नहीं बदलते और यही सही हैं। किसी भी व्यज़्ति, सज़्बन्धी, विरासत, या परज़्परा को जो हमें मसीह से और उसकी सच्चाई से दूर करती हो छोड़ देना चाहिए (देखिए व्यवस्थाविवरण 13:1-9; मज़ी 10:34-37; लूका 12:51-53; 14:25, 26; 1 कुरिन्थियों 1:10-13)।

हमें ''झगड़ों'' में नहीं पड़ना चाहिए। मूर्खतापूर्ण विवादों और वंशावलियों की बहसों से आम तौर पर झगड़े बढ़ते हैं। ऐसी बहसें छोटी छोटी बातों से शुरू होकर गाली ग्लौज तक बढ़ते बढ़ते भाइयों में मार-पीट तक पहुंच जाती हैं।

दुख होता है जब मसीह की व्यवस्था के साथ जिससे लोगों को इकट्ठे होना चाहिए, लोग इतनी बेदर्दी से पेश आते हैं जिससे ''झगड़े'' बढ़ जाते हैं।[29] इस तरह कुछ लोग मानवीय विश्लेषण से आत्मिक पंगु बन जाते हैं। वे कल्पनाओं से ही अशांति पैदा कर लेते हैं और महत्वपूर्ण बातों को कम महत्व देकर महत्वहीन बातों को प्राथमिकता देते हैं

(देखिए मत्ती 23:23, 24; गलातियों 4:9-11)। ऐसा व्यवहार ''अलाभकारी'' (जिससे कोई उन्नति नहीं होती) और ''व्यर्थ'' (जिसका कोई उद्देश्य नहीं होता) है।

विलियम बर्कले ने इन विचारों का सार ठीक ही निकाला है:

> यूनानी दार्शनिक अपना समय अपनी अति सूक्ष्म समस्याओं पर लगाते थे। यहूदी रब्बी अपना समय पुराने नियम के पात्रों के लिए काल्पनिक और सुधारने वाली वंशावलियों को बनाने में लगाते थे। यहूदी ग्रन्थी अपना अधिकतर समय इस चर्चा में बिताते थे कि सब्त के दिन क्या किया जा सकता है और क्या नहीं, और क्या अशुद्ध नहीं है। कहते हैं कि इस बात का खतरा है कि धार्मिक प्रश्नों पर चर्चा करने वाले आदमी को अपने आप को धार्मिक समझने का खतरा है। चर्चा करने वाला एक ऐसा गुट है जो केवल बहस के लिए ही तर्क करता है। एक ऐसा गुट है जो धर्म शास्त्र के प्रश्नों पर कई घण्टे तक बहस करेगा। धर्म शास्त्र के प्रश्नों पर चर्चा करना दयालु होने और घर में सावधान रहने और सहायक होने, या लगन और इमानदारी से काम करने से आसान है। जब मसीही जीवन के छोटे छोटे कार्य यूं ही पड़े हों तो धर्म शास्त्र के प्रश्नों पर गहन चर्चा के लिए बैठना व्यर्थ है। वास्तव में यह सही है कि ऐसी चर्चा मसीही दायित्वों से ध्यान हटाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती। ...
>
> इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि मसीही चर्चाओं का कोई महत्व नहीं है; परन्तु कहने का भाव यह है कि जिस चर्चा का फल व्यवहार में नहीं होता वह चर्चा केवल समय बर्बाद करना ही है।[30]

बिगड़े लोगों को सुधारने के लिए अनुशासन की आवश्यकता है (vv. 10, 11)

प्रभु को मालूम था कि कुछ लोग गलत करने या अभक्ति का व्यवहार दिखाने की ज़िद करेंगे। आत्मा ने हमें ऐसे व्यक्ति के लिए एक नाम उपल्बध कराया है: वह ''पाखंडी''[31] (3:10) है। झगड़े का परिणाम फूट ही है।

ऐसे व्यक्ति के साथ निपटने का ढंग 3:10ख में दिया गया है। भाइयों को पाखंडी सदस्यों को पहली और दूसरी ''चेतावनी'' देनी चाहिए (देखिए मत्ती 18:15-17)। यदि इन प्रयासों से कोई लाभ नहीं होता तो विश्वासी मसीहियों को चाहिए कि उसे ''छोड़'' दें। ऐसे पाखंडी व्यक्ति के साथ जिसे पहले ही समझाया गया हो, मिलने वाले हर व्यक्ति को चाहिए कि *उससे अलग रहने या उसे छोड़ देने की पौलुस की इस बिनती की ओर ध्यान दे।* कहने का अर्थ यह है कि हमें उसके पाखंडी मन से अलग होना और किसी व्यक्ति या गुट के साथ मिलने से इन्कार करना है जो प्रभु के लहू से खरीदी देह में फूट डालता है (देखिए 1 कुरिन्थियों 1:10; रोमियों 16:17, 18; प्रेरितों 20:29-31)। बहुत से भोले-भाले भाई इस शैतानी युक्ति के कारण विश्वास से फिर गए हैं।

प्रभु की देह के किसी सदस्य के विरुद्ध इतनी कठोर और निर्णायक कार्यवाही क्यों की

जानी चाहिए? यहां तक (उसके मन और व्यवहारों को बदलने के सभी प्रयासों के बाद), हम ''जानते'' हैं कि ऐसा व्यक्ति ''भटक गया''[32] है। (3:11)। गड़बड़ करने वाले इस व्यक्ति ने अपने आप को *मसीह से* और उसके मार्गों से मोड़ लिया है। वह ''पाप करता रहता है''[33]; इसलिए, परमेश्वर की सच्चाई और उस व्यक्ति के व्यवहार से पता चलता है कि वह ''अपने आप को दोषी'' ठहराता है।[34] वह जानता है कि वह उस बात के जो सच्चाई और ताड़ना से विश्वासी भाई उसे दिखाना चाहते हैं के विपरीत प्रतिक्रिया कर रहा है और वह उसी व्यवहार में बना रहना चाहता है। उसका व्यवहार और बदलने से इन्कार उसे न्याय के लिए जिम्मेदार ठहराता है। यह दुखद स्थिति है, परन्तु यदि वह व्यक्ति जिसे मसीह के पदचिह्नों पर चलना चाहिए (1 पतरस 2:21-25) ऐसे ही चलते रहने की जिद करता है, तो उससे अलग हो जाना चाहिए (2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 14, 15)।

पाठ 6: अंतिम टिप्पणियां (3:12-15)

पौलुस की व्यक्तिगत टिप्पणियों के साथ हम इस शानदार पत्री के बाकी भाग से गुज़रने वाले हैं जिसका आज के भाइयों से कोई सम्बन्ध नहीं है। कितनी बड़ी गलती है यह!

समझौते और प्राप्तियां (पद 12-14)

पौलुस द्वारा अरतिमास, तुखिकुस और तीतुस को एक से दूसरी जगह बदलने के बारे में पढ़कर (3:12) हमें ध्यान दिलाता है कि प्रभु की सेवा में कहीं भी लगने को तैयार रहना चाहिए। प्रमुख शिक्षकों द्वारा सेवा में परिवर्तन की पौलुस की पुकार में हमारे लिए एक सबक है। सदस्य उन क्षेत्रों में जाएं जहां आवश्यकता है (देखिए तीतुस 1:5; प्रेरितों 13:1-3; 16:6-10)। हम में से हर एक में इस चुनौती भरे गीत का जोश होना चाहिए:

> हे प्रभु, जहां तू मुझे भेजना चाहता है वहां मैं जाऊंगा,
> पहाड़ पर, मैदान में या समुद्र में;
> हे प्रभु, मैं वही कहूंगा जो तू चाहता है कि मैं कहूं,
> मैं वही बनूंगा जो तू चाहता है कि मैं बनूं।[35]

समझौतों के लिए काम करने वालों के लिए प्रबन्ध करने होंगे। जेनास में व्यवस्थापक और अपुल्लोस की सहायता के लिए दिए गए पौलुस के निर्देश में यही बात है (3:13)। उसने तीतुस को उनकी सहायता करने के लिए कहा ताकि मार्ग में ''उन्हें किसी वस्तु की घटी न होने पाए।''[36] यह सेवा ''मेहनत से'' होनी थी।[37] आज ''सुसमाचार लेकर जाने वालों'' की सहायता के लिए निकलने पर ज्या हम में वही दिल धड़कता है?

यदि हम किसी के मुताबिक ढल सकते हैं और समझौता करने को तैयार हैं, तो हम अपनी प्राप्तियों पर आनन्द कर सकते हैं। पौलुस जानता था कि मसीही लोगों के लिए यह

करना ''सीखना''[38] आवश्यक होगा (3:14)। भले कामों में ''लगे''[39] होने के कारण हम में यही जज़्बा होना चाहिए।

हमें भले कामों को आदेश के रूप में देखना चाहिए, ज़्योंकि ये आवश्यकताएं ''ज़रूरी'' हैं।[40] अपनी पत्री की अन्तिम टिप्पणियों तक भी पौलुस ने अपना ध्यान नहीं बदला। उसने तीतुस से और सब मसीहियों से भले कामों में लगे रहने और इस कार्य को आवश्यक, सही और उचित के रूप में देखने का आग्रह किया!

भाइयों के इन सभी समझौतों और प्राप्तियों का *बड़ा लक्ष्य* है ''ताकि निष्फल न रहें।'' यूहन्ना 15:8 में मसीह ने कहा था, ''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओं, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।''

एक तेजोमय मेल (पद 15)

पौलुस के शज़्द उसमें और उसके साथियों में मेल की झलक देते हैं: ''मेरे *सब* साथियों का तुझे नमस्कार'' (3:15)। वह मेल दूसरे स्थानों के मसीहियों के साथ भी था: ''जो विश्वास के कारण हमसे प्रीति रखते हैं, उनको नमस्कार।''

मसीही लोगों में यह पारिवारिक मेल अद्‌भुत है। दूसरी जातियों में किसी दूसरे देश और सज़्यता में जाकर तुरन्त संगति की घनिष्ठता मिल जाती है। परमेश्वर का पिता होना और मनुष्य का भाई होना सच्चे अर्थ में दिखाई देता है। यह मेल परमेश्वर से सज़्बन्धित, जिसका अनुग्रह ''तुम *सब* पर होता रहे (गा)।''

संक्षेप में

इस प्रकार यह छोटी सी परन्तु महत्वपूर्ण पत्री समाप्त होती है। ज़्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अंधेरे नैतिक और आत्मिक क्षेत्रों में भेजी गई थी, इसलिए यह ईश्वरीय प्रदर्शन के रूप में यहोवा परमेश्वर और मसीह के द्वारा छुटकारे की उसकी योजना सचमुच पर्याप्त है और चमकती भी है (2 कुरिन्थियों 3:4-6)।

पौलुस, तीतुस और क्रेते की कहानी में लिप्टा हुआ यह शुभ समाचार है कि तीतुस को अपने आस-पास के भ्रष्ट लोगों को बताने का आग्रह था। उनकी स्थिति को जानते हुए, पौलुस इस बात से नहीं डगमगाया कि तीतुस ज़्या कर सकता था और उसे ज़्या करना चाहिए था।

> [पौलुस तीतुस से यह नहीं कहता:] ''उन्हें छोड़ दे। वे आशाहीन हैं और सबको मालूम है।'' वह कहता है: ''वे बुरे लोग हैं और सब लोगों को मालूम है। *जाकर उन्हें बदल।*'' कुछ ही ऐसे पद हैं जो मसीही मिशनरी और सुसमाचार प्रचारक के ईश्वरीय आशावाद को इस प्रकार दिखाते हैं, जो किसी मनुष्य को आशाहीन मानने से इन्कार करता है। जितनी बड़ी बुराई होगी, उतनी ही बड़ी चुनौती है। यह मसीही मान्यता है कि कोई ऐसा पाप नहीं है जो मसीह यीशु के अनुग्रह से बड़ा हो और उसका सामना करके उस पर विजय पा सके।[41]

ऐसे आशावाद और ऐसी कहानी बताने से, आइए हम उन लोगों के रूप में जिनके पास ''भले भले कामों में सरगर्म'' (2:14) होने की परमेश्वर की सज़्पज़ि है पृथ्वी के अंधेरे इलाकों में जाएं।

पाद टिप्पणियां

[1]अधिकारी (यू.: *exousia*) - ''शासक, मानवीय न्यायाधीश ... तीतुस 3:1 ...'' (थेयर, 225)। [2]आज्ञा मानना (यू.: *peitharcheo*) - ''(किसी शासक या अधिकारी की) आज्ञा मानना प्रेरितों 5:29, 32 ... न्यायाधीश, तीतुस 3:1 ... किसी की सलाह मानना'' (सी.जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* अनु. व संशो. जोसेफ एच थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एण्ट टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क. ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 497)। [3]तैयार (यू.: *etoimos*) - ''सज़्भालने को तैयार ... उपयुज़्त, समयानुकूल तैयार किए हुए,'' (थेयर, 255)। [4]बदनाम (यू.: *blasphemo*) - ''अपशज़्द बोलना, गाली देना, निन्दा करना ... बुराई करना ... [विशेष तौर पर,] उन लोगों की बात जो जान बूझकर तिरस्कारपूर्ण बातों से परमेश्वर या पवित्र वस्तुओं को योग्य सज़्मान नहीं देते'' (थेयर, 102)। [5]झगड़ालू नहीं (यू.: *amachos*)- ''विरोध करने वाला न होना ... झगड़े से परहेज़ करना ... झगड़ालू न होना: 1 तीमु. 3:3; तीतु. 3:2'' (थेयर, 31)। [6]कोमल स्वभाव (यू.: *epieikes*) - ''शोभनीय ... न्यायसंगत, उचित, सज़्य, 1 तीमु. 3:3; तीतु 3:2; 1 पत. 2:18; याकूब 3:17 ... फिलि. 4:5'' (थेयर, 238)। [7]बड़ी नम्रता (यू.: *prautes*) - ''... शालीनता, विनम्रता, शिष्टाचार, लिहाज रखना ... तीतु. 3:2 ... गला. 5:23; कुलु. 3:12; इफि. 4:2; 2 तीमु. 2:25 ... एक अध्यक्ष की विशेषता, 1 तीमु. 3:2'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क, संशो. विलियम एफ़. अर्ड्ट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957], 705)। [8]विलियम बार्कले, *न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (लंदन: एससीएम प्रैस, 1964), 240 से। [9]निर्बुद्धि (यू.: *anoetos*) - ''समझ न रखना, ... 1 तीमु. 6:9 ...'' (थेयर, 48); ''नासमझ ... सोच रहित ... कामुक'' (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 60)। [10]आज्ञा न मानने वाले (यू.: *apeitheis*) - ''जिन्हें समझाया न जा सके, अविश्वासी, ... रोमि. 1:30; 2 तीमु. 3:2; तीतु. 1:16; 3:3'' (रोबिन्सन, 69)।

[11]ज़्म में पड़े हुए (यू.: *planao*) - ''... गुमराह ... आवारा घूमना ... बेवकूफ बने हुए ... तीतुस 3:3, उनके मन भटक गए हैं, इब्रा. 3:10 ... गलत निर्णय लेना ... मर. 12:24 ... 2 तीमु. 3:13'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 671); ''... गलती करना ... गलत निर्णय लेना ... सच्चाई से भटकना'' (रोबिन्सन, 586)। [12]अभिलाषाएं (यू.: *epithumia*) - ''बुरे अर्थ में किसी निषेधित वस्तु की इच्छा करना'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 293); ''सुख विलास'' (यू.: *hedone*) - के साथ जुड़ने पर ''तृप्ति, आनन्द, ... शारीरिक आनन्द: लूका 8:14 ... तीतुस 3:3; याकूब 4:3; 2 पत. 2:13 ... इच्छा, लालसा, वासना, याकूब 4:1'' (रोबिन्सन, 323)। [13]दासत्व (यू.: *douleo*) - ''बुरे अर्थ में, उन लोगों की बात जो किसी नीच शज़्ति के दासत्व में आ गए हों, अधीन होना, अपने आप को सौंपना ... रोमि. 6:6 ... 7:25 ... तीतुस 3:3 ... फंसाना, बंदी बनाना, सेवा करना अधीन होना ... जो अपने आप को पूरी तरह से किसी की इच्छा के आगे सौंप देता है, 1 कुरिं. 7:23 ... यू. 8:34; रोमि. 6:17,20'' (थेयर, 157-58)। [14]वैर भाव (यू.: *kakia*) - ''नये नियम में बुराई, नैतिक अर्थ में बुराई ... दुष्टता, चरित्रहीनता ... याकूब 1:21; 1 पत. 2:16 ... बदनामी ... इफिसियों 4:31; कुलुस्सियों 3:8; तीतुस 3:3; 1 पतरस 2:1'' (रोबिन्सन, 370)। [15]डाह (यू.: *phthonos*) - ''ईर्ष्या, द्वेष, ... तीतु. 3:3 ... रोमि. 1:29'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 865)। [16]लुईस सी. हैनरी, *बैस्ट कुटेशन्ज़ फॉर ऑल ओकेशन्स* (ग्रीनविच, कॉन.: फॉसेट पज़्लिकेशंस, 1945), 68. [17]घृणित (यू.: *stugetos*) -

''घृणाजनक, तीतुस 3:3'' (थेयर, 591)। [18]कृपा (यू.: *chrestites*) – ''नैतिक भलाई, ईमानदारी ... दया। रोमि. 2:4 ...कुलुस्सियों 3:12; तीतुस 3:4'' (थेयर, 662)। [19]रोबिन्सन, 787. [20]प्रीति (यू.: *philanthropia*) – ''मनुष्यजाति का प्रेम, परोपकार, ... तीतुस 3:4'' (थेयर, 653); ''परमेश्वर की कृपा ... अधिकारियों के एक गुण के रूप में ... आतिथ्य के अर्थ में'' (अर्ंट एण्ड गिंगरिक, 866)।

[21]अनुग्रह (यू.: *eleos*) – ''परमेश्वर का पापियों के प्रति अनुग्रह, तीतुस 3:5 ...परेशानी में पड़े लोगों की सहायता करने को तैयार ... के साथ राहत देने की इच्छा से दुखी और पीड़ित लोगों की भलाई'' (थेयर, 203-4)। [22]''यह महत्वपूर्ण बात है कि जिस पद पर हम तीतुस की पत्री में विचार कर रहे हैं उससे धर्म के कामों की तुलना की जाती है। बपतिस्मा विश्वास का एक कार्य है। यह धर्म का कोई कार्य नहीं है जिससे उद्धार कमाया जाता हो और इस कारण यह उन पदों से जो यह ज़ोर देते हैं कि उद्धार 'कर्मों से नहीं' होता, अलग नहीं है।'' (रेमंड कैल्सी, ''टाइटस,'' *मैसेजस ऑफ़ द बुक्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [फोर्ट वर्थ, टैक्स.: फोर्ट वर्थ क्रिश्चियन कॉलेज बुक स्टोर, 1961], 254)। [23]नया बनाना (यू.: *anakainosis*) – ''फिर से मरम्मत करना, पवित्र आत्मा के द्वारा और अच्छा बनाने के लिए पूरी तरह से बदलना... तीतुस 3:5'' (थेयर, 38)। देखिए प्रेरितों 2:38; 5:32; रोमियों 8:9. [24]लॉयड कोरी, *कोटेबल कुटेशन्स* (वीटन, Ill.: विज़्टर बुक्स, 1985), 118. [25]दृढ़ता से (यू.: *diabebaiomai*) – ''जोर देकर'' (अर्ंट एण्ड गिंगरिक, 180)। [26]लगे रहना (यू.: *proistasthai*) – ''सामने रखना या ठहराना ... 1 तीमुथियुस 5:17 ... रक्षक होना ... देखभाल के लिए, ध्यान देना ... ईमानदारी के काम करना'' (थेयर, 539-40)। सुसमाचार प्रचारक को इस चुनौती को करने में शुरुआत करने वाला होना चाहिए। [27]बचना (यू.: *periistemi*) – ''अपने आप को दूर करना ... किसी चीज़ से बचने के उद्देश्य के लिए, इसलिए ... बचना, दूर रहना, 2 तीतु. 2:16; तीतु. 3:9'' (थेयर, 503)। [28]मूर्खता (यू.: *moros*) – ''बिना सीखे या पढ़े, 1 कुरिं. 1:27; 3:18; 4:10 ... बिना पहले सोचे या बुद्धि के, मज़ी 7:26; 23:17, 19 ... व्यर्थ, खोखला ... 2 तीमु. 2:23; तीतु. 3:9 ... अपवित्र, अशुद्ध (ज़्योंकि ऐसा आदमी उद्धार से जुड़ी बातों को नज़रअन्दाज करता और उन्हें तुच्छ जानता है), मज़ी 5:22'' (थेयर, 420)। [29]झगड़ा (यू.: *mache*) – ''भिड़ंत ... युद्ध, लोगों में मतभेद ... झगड़ा: 2 कुरिं. 7:5; 2 तीमु. 2:23; याकूब 4:1; तीतुस 3:9'' (थेयर, 394)। [30]विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़, संशो. संस्क (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1960), 303.

[31]पाखंडी (यू.: *hairetikos*) – ''समर्थक, जो 'पाखंड' को स्थापित करता या उनसे जुड़ा हो, तीतु. 3:10 ... धर्म विरोधी'' (रोबिन्सन, 17); ''... फूट डालना'' (अर्ंट एण्ड गिंगरिक, 23); ''... मतभेद रखने वाला व्यक्ति ... झूठी शिक्षा को मानने वाले'' (थेयर, 16)। [32]भटक गया (यू.: *exestraptai*) – ''बाहर मुड़ना या घूमना ... अन्दर बाहर मुड़ना ... घूमना, बदलना, जीवन और ढंग बदलना ... उतार देना ... विश्वास में ... तीतुस 3:11'' (रोबिन्सन, 234)। [33]पाप (यू.: *harmartanei*) – ''... चूकना, गलती, चूक ... स्वेच्छा से सही, दायित्व, या व्यवस्था से दूर जाना'' (रोबिन्सन, 35)। [34]अपने आप को दोषी ठहराना (यू.: *autokatakritos*) – ''अपना न्याय स्वयं करने वाला'' (रॉबर्ट यंग, *अनालिटिकल कंकोर्डेंस टू द बाइबल* [न्यू यॉर्क: फंक एण्ड वेगनल्स कंपनी, 1893], 196)। [35]मेरी ब्राउन के अंग्रेजी गीत ''आई'ल गो वेयर यू वांट मी टू गो'' का अनुवाद। [36][उसके] मार्ग में [उसकी] सहायता करना (यू.: *propempson*) – ''भोजन, धन से, यात्रा में किसी की सहायता करना, साथियों के लिए प्रबन्ध करके, यात्रा के साधन आदि, किसी के मार्ग में भेजना ... 1 कुरिं. 16:11 ... तीतुस 3:13'' (अर्ंट एण्ड गिंगरिक, 716)। [37]मेहनत से (यू.: *spoudazo*) – ''... उतावली करना ... 2 तीमुथियुस 4:9, 21; तीतुस 3:12 ... अपने आप को थका देना, कोशिश करना, ध्यान देना ... गला. 2:10; इफि. 4:3 ...'' (थेयर, 585)। [38]सीखना (यू.: *manthanetosan*) – यह शब्द ''दूसरों से पूछकर, या सीखने से, अध्ययन करके, समीक्षा करके, सीखने, पढ़ने के लिए सामान्य और समर्पित प्रयास की मांग करता है ... 1 तीमु. 2:11; 2 तीमु. 3:7 ... मज़ी 11:29 ... किसी से भी सीखना, उसकी शिक्षाएं, विधियां ... ज्ञान लेना ... समझना, प्रकशित. 14:3 ... अनुभव से सीखना, ... आदत बना लेना, आदी होना ... 1 तीमुथियुस 5:4, 13; तीतुस 3:14'' (रोबिन्सन, 445)। [39]लगना (यू.: *proistemi*) – ''परिश्रम से करना, बने रहना, किसी की देखभाल करना'' (रोबिन्सन, 620)।

[40]जरूरी (यू.: *anagkaios*) - ''आवश्यक, अनिवार्य ... अपरिहार्य ... यह कर्ज़व्य की बात थी, इब्रा. 8:3 ... सही और उचित सोचना, 2 कुरिं. 9:5; फिलि. 2:25'' (रोबिन्सन, 43-44)।

[41]बार्कले, 278.